रात्रिक्लास 5/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है ?

इन आँखों से जो कुछ देखा जाता है सभी भूल जाना है। बाप ने समझाया है अगर निश्चय बुद्धि हो,.....मिलकीयत आद का ट्रस्टी बन जाये। हमने शिवबाबा को दिया। आपने ही दिया था। कहते हैं ना ईश्वर ..... कह कृपा है। अभी बाप सम्मुख कहते हैं उनके हवाले कर दो। तुम उनको ट्रस्टी बनाओ वह फिर तुमको ट्रस्टी बनावेंगे। पिछाड़ी में कोई भी चीज़ याद न आये। धन–मित्र–सम्बन्धी बच्चे आदि कुछ भी याद न आये। इन आँखों से जो देखते हैं उनसे भी वैराग्य। अकेले आये थे अकेले जाना है। शिवबाबा को दे दिया। शिवबाबा ने कह दिया है ट्रस्टी होकर शरीर निर्वाह अर्थ करते रहो तो वारिसों के लाइन में आ सकते हैं। यह है शिवबाबा के डायरैक्शन। पैसे इकट्ठे तो न भक्ति मार्ग में न ज्ञानमार्ग में कर सकते है। ईश्वर देते हैं; परन्तु वह लेते नहीं। देते और को हैं और लेते बाप से हैं। यहां देते हैं बाप को। तो बाप कहते हैं ट्रस्टी होकर रहो। कोई भी याद न आये। ममत्व न आये। ट्रस्टी पना चाहिए। यह है पापात्माओं की दुनियां। ट्रस्टी करेंगे तो भी पापात्मा को। यहां का हिसाब–किताब है पापात्माओं के साथ। तो पाप बढ़ते जावेंगे ना। अभी है एक पतित–पावन बाप से। उनसे लेन–देन रखने से भरतु हो जावेंगे। और सभी खाली हो जावेंगे। बाप आते ही हैं भरतु करने। तुम पद्मापदम भाग्यशाली बनते हो अनगिनत। ऐसे थे। फिर भक्तिमार्ग में सभी गंवाय दिया। ज्ञान से झोली भरती है। भक्ति में खाली हो जाती है। फिर बाप आकर झोली भरते हैं। रावण खाली कर देता राम भर देते यह खेल है। इनको कोई जानते ही नहीं। बाप समझाते हैं हार और जीत का खेल है। सन्यासी तो समझा न सके। बाप कहते हैं तुम कितने तुच्छ बुद्धि बन गये हो। पार्टधारी हो(क)र क्रियेटर, डायरैक्टर, प्रिन्पल एक्टर्स को कोई भी नहीं जानते। अभी बाप आकर आस्तिक बनतो हैं। रास्ता बहुत सहज है। इसमें भूख मरने की बात ही नहीं। तुमको पता था क्या ऐसे हम मालिक बनेंगे। सभी डिक्लेयर कर देते हैं। तुम भी डिक्लीयर कर देते हो। भल बाबा कहेंगे भल घुमो फिरो एरोप्लेन में जाओ। बच्चे जिसमें खुश हो बाप मना नहीं करेंगे। बाप को याद करते एरोप्लेन में घूमते रहो। भूलना नहीं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। बाप आते ही हैं मुक्त करने। फ्रीडम देने; इसलिए बाप को लिबरेटर गाइड कहा जाता है। सारी दुनियां पर अभी रावण राज्य है। सभी को लिबरेट करते हैं। गाइड बनते हैं। पुरानी दुनियां से लिबरेट करते हैं नई दुनियां में ले जाते हैं। यह तो बाप का ही काम है। बाप आते ही हैं पुरानी दुनियां से लिबरेट करते हैं। मुक्त करते हैं। है बहुत सहज; परन्तु किसकी बुद्धि में बैठे। एक सेकण्ड की बात है। दो अक्षर से भी समझ जाये। बाप इशारे में समझाते हैं। दो अक्षर से भी समझ जाये। बहुत ही सहज बताते हैं। फिर भी क्यों नहीं जास्ती आते। हाँ माया का तूफान बहुत आता है। माया की लड़ाई है ना। तो हार खा लेते देही अभिमानी बन नहीं सकते । ड्रामा में दो बात एक ही बार नहीं हो सकती। तुमको देही अभिमानी ज़रूर बनना है। तब ही विकर्म विनाश हो। इस योग अग्नि से तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के पाप जल जावेंगे। बाप कहते हैं तुम सतोप्रधान थे अभी तमोप्रधान बने हो। फिर याद से ही सतोप्रधान बनना है। राज–भाग लेना है। यह है ही राजयोग सन्यासी सिखला नहीं सकते। यहां तो भागने की बात ही नहीं। लाचारी विकार के लिए तंग करते हैं, मार देते हैं तब ही भागती है। नहीं तो लॉ है कब जनावरों को भी नहीं मार सकते। मारे तो पकड़ ले। यहां तो स्त्रियों को कितना मारते हैं विकार के लिए। अभी विकारी तो गवर्मेन्ट भी है; इसलिए स्थापना में यह विघ्न पड़ते हैं। नई बात थोड़े ही है। बाप कहते हैं पवित्र बनो एक जन्म तो विश्व की बादशाही मिलेगी। पक्का निश्चय चाहिए। बाप हमको बेहद विश्व का मालिक बनाते हैं। निश्चय हो तो बेड़ा पार हो। बाप खेवैया भी है ना। बाग़वान भी है। अभी तुम कांटों से फूल बन रहे हो। मैदान में हो कब माया का कांटा लग जाता है। आधा कल्प की आदत जल्दी नहीं छूटती है। निश्चय बुद्धि भी वही होंगे जो कल्प पहले हुये थे। मीठे–2 बच्चों जो मिले बोलो दो बाप है। लौकिक से हद का वर्सा पारलौकिक से

बेहद का वर्सा। रावण श्राप देते हैं। राम वर्सा देते हैं। इन बातों को समझो। अभी है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाप वर्सा दे रहे हैं। फिर रावण का श्राप ख़त्म हो जाता है। 63 जन्म श्राप। 21 जन्म वर्सा। उसमें आयु बड़ी होती है। एवर हेल्दी रहते हो। बाप को खुशी होती है। बुलाते भी हैं पतित दुनियां में। पावन दुनियां में कोई बुलाते ही नहीं। ऑर्डर करते हैं हे पतित–पावन आकर हमको पावन बनाओ। हुकुम करते हैं। बाप भी कहते हैं जो हुकुम बच्चों। हम आया हूँ तो अभी श्रीमत पर चलना है। मैं कल्प–2 आकर पावन बनाता हूँ। तब ही बाप कहते हैं नमस्ते। सर्वेन्ट है ना। यह बाप भी है गुरू टीचर भी है। सर्वेन्ट भी है। बच्चों पर न्योछावर जाते हैं फिर बच्चे जो न्योछावर जावें। बच्चे ही भक्तिमार्ग में कहते हैं आप आओ तो हम न्योछावर जावेंगे। बाबा ने थोड़े ही कहा। कब सुना? रथ कहां जो सुनावे। बाप कोई तकलीफ नहीं देते। सिर्फ़ यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। आया हूँ पावन बनाने। प्रतिज्ञा कर फिर पतित बनेंगे तो सदगुरू का निन्दक ठौर न पाये। गुरू तो ढेर हैं। सदगुरू है एक। कहते भी हैं अकाल मूर्त। आत्मा अकाल मूर्त है ना। उनका तख़्त भी है। परमात्मा भी मनुष्य का तख़्त लेते हैं। तुम आत्माओं का(को) रथ मिलता है मनुष्य का। मेरे लिए कहते हैं कच्छ अवतार मच्छ अवतार। यह सभी बाप बच्चों को देते हैं। यह दुनियां अभी छी–2 है। वैश्यालय है ना। अभी बाप शिवालय स्वर्ग़ बनाते हैं। बाप कहते हैं स्वर्ग़ में चलेंगे? वहां यह विकार नहीं मिलेगी। यहां जिनको ले आते हैं ज़रूर सभी ने प्रतिज्ञा की होगी। अभी तुम जो कुछ करते हो उसका फिर यादगार बनाते आते हैं। कोई भी बन्धन नहीं। जास्ती बच्चे नहीं पैदा करनी है। तुम पार्वतियां हो। तुम अमरकथा सुन रही हो। अभी जो बच्चे पैदा करेंगे तो बिच्छु–टिण्डण होंगे। सतयुग में तुम ऐसे फूल पैदा करेंगे। शास्त्र–वेद–उपनिषद आदि जो भी भक्तिमार्ग के लिए। बाप को आना ही है संगम पर। ज्ञान देकर सद्गति करते हैं। ज्ञान सागर है ही एक। जिसके सामने बैठे हो। वह बाप जिस रथ पर बैठते हैं उनको तुम दादा कहते हो। बच्चे अज्ञान के कारण गाली दे देते हैं; क्योंकि उन्हों का वर्सा है विख। तो समझते हैं क्या यह हमारा वर्सा छीन लेते हैं। याद करते–2 बच्चे सुन्दर बन जावेंगे। सो भी आधा कल्प लिए सुन्दर बन जाते हैं। याद से ही सुन्दर बनना है। अच्छा मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद–प्यार गुडनाइट। नमस्ते।

रही हुई प्वाइन्ट्स :– बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ फिर तुम भूलते क्यों हो? माया से लड़ाई है तो लड़ना पड़े ना। मुझे क्यों रड़ी मारते हो? बाबा माया बड़ी तंग करती है। मलयुद्ध में कोई से लड़ेंगे तो ऐसे कहेंगे क्या यह अंगरी मारते हैं। मेरी सम्भाल करो। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे सभी पाप भस्म हो जावेंगे। यह सभी अक्षर 5000 वर्ष पहले भी सुनाई थी। तुम कहते हो बाबा आप वही हो। हम भी कहते हैं बच्चे तुम भी वही हो जिनको कल्प पहले भी पढ़ाया था। यहां तुम आते हो रिफ्रेश होने। यहां तुम्हारे सामने बगुले आदि नहीं है। तुम ईश्वरीय परिवार में रहते हो। और कोई भी मित्र–सम्बन्धी आदि नहीं है। रूहानी बाप और रूहानी बच्चे। यहां तुमको फायदा बहुत होता है। वहां इतना नहीं। वहां तो घाटा पड़ जाता है। हंसों साथ बगुले रहते हैं तो अच्छा ही असर पड़ता है। यहां बाप के आगे प्रण कर सिग्रेट आदि छोड़ देते हैं। कहते हैं बाबा फिर ऐसा काम नहीं करूँगा। बाप कहते हैं अगर किया तो सौणा डण्ड पड़ जावेगा। बाप की ग्लानी कराई तो पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे। भक्तिमार्ग वालों को यह पता नहीं है ज्ञान क्या चीज़ है। तुम समझाओ तब समझे। भक्ति से दुर्गति ज्ञान से सद्गति होती है। ओम।

पटना कृष्ण नगर सेन्टर बन्द कर एक बड़ा म्युज़ियम खोला है जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं:–

BRAHMA KUMARIS
OVER SAMADAR PHARMACY
XXXX KADAM KUA
PATNA -3